विचार बिन्दु

मुस्कान थके हुए के लिए विश्राम है, उदास के लिए दिन का प्रकाश है तथा कष्ट के लिए प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है। –अज्ञात

खुशियों और खतरों का मौसम है मानसून

तन – मन को झुलसाते गर्मी के रौद्र रूप से निजात दिलाने बारिश का मौसम अपने साथ राहत और सुकून लाता है। मगर बारिश की राहत के साथ गरजी और कड़की आकाशीय बिजली और बादल फटने की घटनाओं ने देश में कोहराम मचा दिया है। मौसम विभाग के पूर्व अनुमानों को धत्ता बताते हुए देश में विशेषकर उत्तर भारत में भीषण गर्मी से तप रहे लोगों को मानसून की बारिश ने जहाँ राहत पहुंचाई वहां आकाशीय बिजली मौत बनकर टूटी। मानसून अपने साथ जहां खुशियों की सौगात लेकर आते है वहीं मानसून के खतरे भी कम नहीं है जिससे हर साल सैंकड़ों लोग अकाल काल कलवित हो जाते है। अतिवृष्टि, बाढ़, आकाशीय बिजली और बादल फटने की घटना आम बात हो गई है। मॉनसून आने के साथ ही आए दिन बादल फटने और बिजली गिरने से लोगों की मौत की खबरें सामने आ रही हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार दुनिया में हर साल बिजली गिरने की करीब 2 लाख 40 हज़ार घटनाएं दर्ज होती हैं। इन घटनाओं में कितनी जानें जाती हैं, इसे लेकर कई तरह के अध्ययन अलग आंकड़े बताते हैं। एक स्टडी की मानें तो दुनिया में 6 हज़ार लोग हर साल बिजली गिरने से मारे जाते हैं। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो की मानें तो सिर्फ भारत में हर साल 2500 लोग बिजली गिरने से मारे जाते हैं। ब्यूरो के अनुसार, 2000 से 2014 तक भारत में बिजली गिरने से 32,743 लोगों की मौत हुई। एक गैर सरकारी अध्ययन के मुताबिक देश में हर साल 2,500 लोग इन घटनाओं के कारण मौत के शिकार हो जाते हैं। भारत में आकाशीय बिजली की वजह से हर साल होने वाली मौत के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक भारत में आकाशीय बिजली गिरने से हर साल करीब 2500 से ज्यादा लोगों की मौत हो जाती है। देश में आकाशीय बिजली गिरने की करीब 96 प्रतिशत घटनाएं ठाामीण इलाकों में होती हैं।

इस आलेख में हम बिजली गिरने और बादल फटने की जानकारी आम पाठकों तक पहुँचाना चाहते है। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक बारिश के साथ तेज चमकती रोशनी और उसके बाद कड़कड़ाती आवाज सुनाई देती है।

आसमान में चमकी यह बिजली तेजी से पृथ्वी पर गिर कर इंसानों की मौत का कारण भी बनती है। आकाशीय बिजली एक शक्तिशाली करंट है। इसके गिरने के समय लोगों को खुद को बचाने का क्षण भर का समय भी नहीं मिल पाता । मौसम विभाग के अनुसार, बिजली का गिरना या आघात एक बड़ा विद्युतीय प्रवाह है जो तूफान के दौरान हवा की गति के बढ़ने और कम होने के कारण उत्पन्न होता है। इस दौरान, पृथ्वी की बाहरी परत पर सकारात्मक चार्ज होता है क्योंकि विपरीत चार्ज आकर्षित करता है, आंधी के बादलों में मौजूद नकारात्मक चार्ज पृथ्वी की बाहरी परत पर मौजूद सकारात्मक चार्ज से जुड़ना चाहता है। इसी भांति देश के कई राज्यों में इस समय बादल फटने की घटनाओं के कारण तबाही मची हुई है। देश के दक्षिण से उत्तर तक तीन राज्यों में तीन दिन के अंदर बादल फटने की 6 घटनाएं हुई हैं। केरल के वायनाड से लेकर उत्तराखंड के केदारनाथ और हिमाचल प्रदेश के कुल्लू, शिमला और मंडी जिलों में इसके चलते तबाही जैसे हालात बने हुए हैं। वायनाड में जहां सैकड़ों लोगों की मौत हो चुकी है, वहीं केदारनाथ में सैकड़ों जान जल सैलाब के बीच फंसी हुई हैं।

मॉनसून आने के साथ ही आए दिन बादल फटने और बिजली गिरने से लोगों की मौत की खबरें सामने आ रही हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार दुनिया में हर साल बिजली गिरने की करीब 2 लाख 40 हज़ार घटनाएं दर्ज होती हैं। इन घटनाओं में कितनी जानें जाती हैं, इसे लेकर कई तरह के अध्ययन अलग आंकड़े बताते हैं।

हिमाचल के तीनों जिलों में भारी तबाही के साथ ही 50 से ज्यादा लोग लापता हैं । इन सब घटनाओं के बारे में जानकर आपके मन में भी आ रहा होगा कि आखिर बादल फटना क्या होता है? यह घटना कब और कैसे होती है? बादल फटने का कारण क्या होता है और ये घटनाएं मानसून सीजन में ही क्यों ज्यादा देखने को मिलती हैं। मौसम विभाग के अनुसार, बिजली का गिरना या आघात एक बड़ा विद्युतीय प्रवाह है जो तूफान के दौरान हवा की गति के बढ़ने और कम होने के कारण उत्पन्न होता है। इस दौरान, पृथ्वी की बाहरी परत पर सकारात्मक चार्ज होता है क्योंकि विपरीत चार्ज आकर्षित करता है, आंधी के बादलों में मौजूद नकारात्मक चार्ज पृथ्वी की बाहरी परत पर मौजूद सकारात्मक चार्ज से जुड़ना चाहता है। बादल फटने का अर्थ अचानक ही आए तूफ़ान और भीषण गर्जना के साथ तीव्र गति से होने वाली वर्षा से हैं। जब वातावरण में अधिक नमी होती है और हवा का रुख़ कुछ ऐसा होता है कि बादल दबाव से ऊपर की ओर उठते हैं और पहाड़ से टकराते हैं।

इस स्थिति में तब पानी एक साथ बरसता है। इन बादलों को 'क्यूलोनिवस' कहा जाता है। मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा पहाड़ी क्षेत्रों में बादल अधिक फ़टते हैं। सर्द-गर्म हवाओं के विपरीत दिशा में टकराना भी बादल फटने का मुख्य कारण माना जाता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस प्रक्रिया में पानी असमान्य तेज़ी से गिरता है, जिसे ज़मीन सोख नहीं पाती। वर्षा की गति बहुत तेज होती है, जो भूमि को नम नहीं बनाती, बल्कि मिट्टी को बहा देती है। वर्षा की तीव्रता इतनी अधिक होती है कि वह दो फुट के नाले को पानी के 50 फुट के नाले में तब्दील कर देती है। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक बारिश के साथ तेज चमकती रोशनी और उसके बाद कड़कड़ाती आवाज सुनाई देती है। आसमान में चमकी यह बिजली तेजी से पृथ्वी पर गिर कर इंसानों की मौत का कारण भी बनती है। यह भी बताया जाता है तेज़ गर्मी और नमी के मिलन से बिजली वाले विशेष तरह के बादल गरज़ने के साथ तूफान का रूप ले लेते हैं। इस प्रक्रिया को थंडर स्टॉर्म कहा जाता हैं। थंडर स्टॉर्म मूल रूप से एक उठा मौसम की स्थिति है, जो बिजली के साथ आती है और एक प्रकार की तेज ध्वनि भी होती है जिसको गड़गड़ाहट के रूप में जाना जाता है। थंडरस्टॉर्म के दौरान, उत्पन्न ध्वनि या गड़गड़ाहट सुनने से पहले हम बिजली को देखते हैं क्योंकि प्रकाश ध्वनि की तुलना में तेजी से गति करता है। बादल के अंदर गर्म और नम हवा ऊपर की ओर बढ़ती है और ठंडा होकर क्यूम्यलोनिम्बस बादल बनाती है जो आंधी या थंडरस्टॉर्म का कारण बनता है। आठ-दस किलोमीटर ऊंचे ऐसे बादलों के लोअर में निगेटिव और अपर में पॉजिटिव चार्ज ज्यादा होता है। दोनों के बीच डिफरेंस कम होने पर तेजी से होने वाला डिस्चार्ज बिजली के रूप में सामने आता है। आमतौर पर एक थंडर स्टॉर्म लगभग तीस मिनट तक रहता है और इसका व्यास 15 मील तक हो सकता है। हर थंडर स्टॉर्म में आकाशीय बिजली होती है। एक्सपर्ट के अनुसार आकाशीय बिजली का तापमान सूर्य के ऊपरी सतह से भी ज्यादा होता है। इसकी क्षमता 300 किलोवॉट अर्थात 12.5 करोड़ वॉट से ज्यादा चार्ज की होती है।

मानसून में बिजली कड़कना या गिरना आम बात है। इससे बचने के लिए स्वयं की सावधानी ही जान बचा सकती है। इस दौरान लोगों को घरों पर रहना चाहिए। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का कहना है कि आकाशीय बिजली से थोड़ी समझदारी से काम लिया जाए तो आसानी से बचा जा सकता है। जब बिजली तेज कड़क रही हो तो पेड़ों के नीचे नहीं खड़ा होना चाहिए। बिजली के खंभे और टावर के आसपास नहीं खड़ा होना चाहिए। अगर आप खेत में है तो कोशिश करें कि सूखे स्थान पर चले जाएं। उकड़ू बैठकर दोनों घुटनों को जोड़कर सिर झुकाकर बैठना चाहिए। लोहे समेत धातु से बने सामान साइकिल आदि से दूर रहना चाहिए।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

अल्जाइमर रोग : रोकथाम ही इलाज़ है

डॉ. रामावतार शर्मा

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र एक लंबी परंपरा का हिस्सा है। घरेलू उपचारों से होते हुए फिर वनौषधियों के माध्यम से गुजरता हुआ यह फैक्ट्रियों में निर्मित दवाओं तक आ पहुंचा है।

बीमारियों को हम दो स्पष्ट श्रेणियों में रख सकते हैं। एक तो वे बीमारियां जो त्वरित गति से विकसित होती हैं यानी एक्यूट इलनेस। इनमें संक्रामक रोग, दुर्घटनाएं, चाकू या गोली की मार जैसे रोग या हादसे शामिल हैं। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली ने इन सब के उपचार में बहुत बड़ी सफलताएं प्राप्त की हैं जहां दवाओं या शल्य क्रिया द्वारा असंख्य लोगों का जीवन बचाया जा रहा है। इसके विपरीत जो रोग दीर्घकालिक यानि क्रॉनिक होते हैं उनके पूर्ण उपचार के सारे प्रयास अरबों रुपए के अनुसंधानों के बावजूद भी असफल से ही रहे हैं। यहां या तो रोग को जीवनपर्यंत दवा लेकर नियंत्रण में रखा जा सकता है या फिर कैंसर जैसे रोगों में कुछ अपवादों को छोड़ कर चंद वर्षों या महीनों का जीवन मिल पाता है। दीर्घकालिक रोगों पर हमारी सफलता अभी तक तो असफलता की ही यात्रा है। इन रोगों में कैंसर, आर्थराइटिस, हृदय एवम् अन्य रक्तप्रवाह संबंधी रोग, मस्तिष्क संबंधी रोग और डायबिटीज जैसे मेटाबॉलिक रोग शामिल हैं।

असफलता की इस कड़ी में एक और नाम अल्जाइमर रोग का आता है। 1906 में एक महिला की विशेष परिस्थियों में मृत्यु हुई जहां वह पूर्णतया भुलक्कड़ हो गई थी, उसकी याददाश्त गायब हो चली थी, भाषा पर उसका नियंत्रण खो गया था तथा वह अजीबोगरीब व्यवहार करने लगी थी। डॉक्टर एलाइज अल्जाइमर ने उसके मस्तिष्क का सूक्ष्मदर्शी (माइक्रोस्कोपिक) अध्ययन कर कई परिवर्तनों का पता किया और उनके इस प्रयास के कारण इस रोग का नाम अल्जाइमर्स रोग रखा गया। आज इस घटना के 118 वर्षों बाद भी अल्जाइमर एक असाध्य रोग बना हुआ है हालांकि कुछ दवाएं विकसित की गई हैं परंतु अंतिम परिणाम निराशाजनक ही है। पीड़ित व्यक्ति को मामूली और महंगी राहत के अलावा चिकित्सा पद्धतियों में अभी तक कोई महत्वपूर्ण सफलता हासिल नहीं हुई है। हां, सोशल मीडिया पर आधारहीन वीडियोज प्रसारित कर चालाक लोगों द्वारा बीमार लोगों का आर्थिक दोहन जरूर होने लगा है।

सामान्यतया यह रोग 65 वर्ष की उम्र के बाद देखा जाता है परंतु अब यह रोग 60 वर्ष से कम उम्र में भी पाया जाने लगा है और अंदाजा लगाया जा रहा है कि 2050 तक कम उम्र के अल्जाइमर रोगियों की संख्या तीन गुना से भी अधिक हो सकती है जो कि एक बड़ी संख्या है।

शिक्षा की कमी, विटामिन डी का अभाव, शराब का अनियंत्रित सेवन, रक्त सीआरपी स्तर का ऊंचा बने रहना, डिप्रेशन, लकवे की घटनाएं, अनियंत्रित डायबिटीज और उच्च रक्तचाप आदि कई कारण है जो वैश्विक स्तर पर इस रोग का प्रसार कर सकते हैं। अल्जाइमर का इलाज चिकित्सकों के पास नहीं है परंतु इसकी रोकथाम आपके पास है।

परिस्थियों और आनुवंशिकता को आप भाग्य नहीं मान सकते है क्योंकि इनको काफी हद तक बदलने की क्षमता आप में होती है। ऐसा करना कठिन है पर यह संभव हो सकता है। इसके लिए आपको अपने जीवन की बागडोर संभालनी होगी। प्रत्येक दिन आपको उन छोटे-छोटे अवसरों को पहचानना होगा जो जीवन में उत्साह एवम् उमंग पैदा करते हों फिर चाहे वे अल्पावधि के लिए ही क्यों न हों।

हमारे मस्तिष्क को हम या तो उपयोग में ला सकते हैं या फिर इसको खोने लगते हैं। लूडो, कैरम, शतरंज जैसे खेल, बागवानी, पौधारोपण व संरक्षण, गीत तथा संगीत या नृत्य, चित्रकारी, साहित्य या संवाद या फिर कोई समाजोपयोगी कार्य आदि आपको डिमेंशिया (मनोभ्रंश) से बचा सकते हैं। अपने जीवन में गुणवत्ता (क्वालिटी) लाइए। अपने जीवन की नाव के स्वयं ही कप्तान बनिए। अल्जाइमर जैसे जीवन नाशक रोग को रोका जा सकता है। इसे रोका ही जाना चाहिए क्योंकि रोकथाम ही इसका सर्वोत्तम इलाज है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

मकराना-फुलेरा के बीच इलेक्ट्रिक लोको दौड़ाकर सफल रन ट्रायल किया

जोधपुर से जयपुर के बीच जल्द दौड़ेगी इलेक्ट्रिक ट्रेन, राइकाबाग से फुलेरा के बीच रेल विद्युतीकरण का कार्य पूरा

जोधपुर, (कासं)। राइकाबाग से फुलेरा रेलवे स्टेशनों के बीच रेल विद्युतीकरण का कार्य पूरा होने के साथ ही जोधपुर की राजधानी दिल्ली से इलेक्ट्रिक ट्रेन से सीधी कनेक्टिविटी हो गई है। उत्तर-पश्चिम रेलवे के प्रधान मुख्य बिजली इंजीनियर मनीष कुमार गुप्ता के निर्देशन में डेगाना-फुलेरा रेल खंड के मकराना से फुलेरा रेलवे स्टेशनों के बीच इलेक्ट्रिक लोको 110 किलोमीटर प्रतिघंटा की स्पीड से दौड़ाकर सफल रन ट्रायल लिया गया। अब जल्द ही जोधपुर से जयपुर के बीच इलेक्ट्रिक ट्रेन का संचालन हो प्रारंभ हो सकेगा।

जोधपुर डीआरएम पंकज कुमार सिंह ने बताया कि मकराना से फुलेरा रेलवे स्टेशनों के बीच 64 किलोमीटर लंबे रेल मार्ग पर विद्युतीकरण के साथ ही जोधपुर मंडल पर कुल 1626 किमी रुट में से 1568 किमी रेल मार्ग पर विद्युतीकरण का कार्य पूरा हो गया है। अब राइकाबाग-जैसलमेर रेल मार्ग पर थैयात हमीरा से सानू रेलवे स्टेशनों के बीच सिर्फ 58 किलोमीटर लाइन का विद्युतीकरण कार्य शेष है जिसे शीघ्र पूरा करवा लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि जोधपुर से बीकानेर और मारवाड़ जंक्शन स्टेशनों के मध्य पहले से ही इलेक्ट्रिक लोको से ट्रेनों का संचालन प्रारंभ किया जा चुका है।

■ अब राइकाबाग-जैसलमेर रेल मार्ग पर थैयात हमीरा से सानू रेलवे स्टेशनों के बीच सिर्फ 58 किलोमीटर लाइन का विद्युतीकरण कार्य शेष है

डीआरएम ने बताया कि राइकाबाग से फुलेरा रेलवे स्टेशनों के बीच 250 किलोमीटर लंबे रेल मार्ग पर चरणबद्ध तरीके से रेल विद्युतीकरण का कार्य करवाया गया। जिसके तहत मकराना-मेड़ता ,मेड़ता रोड-पीपाड़ जंक्शन, पीपाड़ जंक्शन से राइकाबाग और अब मकराना से फुलेरा के मध्य विद्युतीकरण का कार्य अप व डाउन दोनों लाइनों पर करवाया गया। इस दौरान प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर मनीष कुमार गुप्ता के साथ निरीक्षण दौरे में मुख्य बिजली इंजीनियर (वितरण) जगदीश चौधरी, मुख्य बिजली इंजीनियर (निर्माण) विश्वेश्वर दयाल, उप मुख्य इंजीनियर अजय इसरानी, मुख्य महाप्रबंधक (इरकॉन) विमल किशोर नागर, महाप्रबंधक सीपी अरोड़ा सहित अनेक अधिकारी, निरीक्षक व कर्मचारी थे।

तेज बरसात से पावटा की खार नदी में सालों बाद आया पानी

पावटा, (निसं)। क्षेत्र में लगातार हो रही बारिश से चारों तरफ पानी ही पानी हो गया है। मूसलाधार बारिश के बाद पिछले 10-12 साल से सूखी पड़ी खार नदी में पानी आया। यह नजारा देख लोगों के चेहरों पर मुस्कान दौड़ गई। इस नजारे को देखने से लोग खुद को नहीं रोक पाए और नदी के पास लोगों की भीड़ जमा हो गई।

ग्रामीणों ने बताया कि करीब 10-12 साल बाद खार नदी आई है, गुरुवार को कई घंटों हुई बारिश के बाद नदी में पानी आ गया। साथ ही तेज बरसात के बाद क्षेत्र में खेत-खलियान जलमग्न हो गए। दूर-दूर तक खेतों में पानी भरा हुआ दिखाई दिया। नदी में पानी की लंबी लहर कई किलोमीटर दूर तक दिखाई दे रही थी। वहीं नदी-नाले, तालाब, बांध पानी से भरे नजर आये। आस-पास के लोगों को पानी आने का पता चला तो बाइक, ट्रैक्टर और अन्य गाड़ियों से नदी-नालों, तालाबों में आए पानी को देखने पहुंच गए। वहीं कस्बे में नगर पालिका की पोल खुलती नजर आई। नगर पालिका की ओर से नालों की समय पर सफाई नहीं होने के चलते मुख्य मार्गों पर कई फीट पानी सड़क पर बहता नजर आया। वहीं मानसून की बारिश से किसानों के चेहरे पर भी खुशी है। तेज बारिश के बाद आगामी फसल के लिए यह बारिश सोना साबित हुई। किसान अब आगामी फसल बोने को तैयार है।

■ तेज बरसात के बाद क्षेत्र में खेत-खलियान जलमग्न हो गए

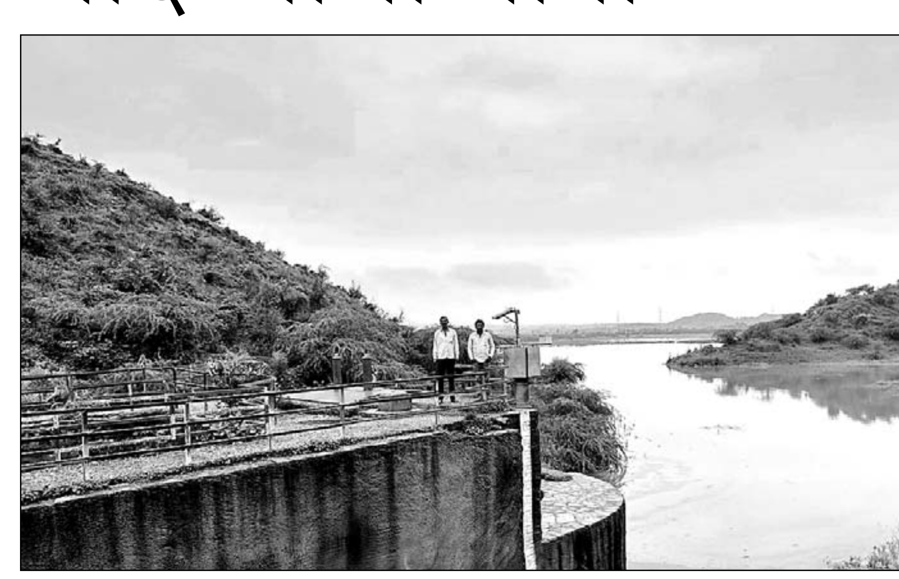

पावटा में मूसलाधार बारिश के बाद 10-12 साल से सूखी पड़ी खार नदी में पानी आया।

सरकारी स्कूलों में रोजाना सातवां पीरियड रिवीजन का रखा जाएगा, आदेश जारी

सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को निजी स्कूलों के विद्यार्थियों के स्तर पर लाने के लिए शिक्षा विभाग का नवाचार

बीकानेर, (निसं)। सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को निजी स्कूलों के विद्यार्थियों के स्तर पर लाने के लिए शिक्षा विभाग एक नवाचार करने जा रहा है। इसके तहत कक्षा आठवीं तक के विद्यार्थियों के सीखने का स्तर बेहतर किया जाएगा, जिससे बोर्ड परीक्षाओं और बाद में प्रतियोगी परीक्षाओं में वह पिछड़े नहीं। शिक्षा विभाग ने शिक्षा सत्र 2024-25 के लिए अकादमिक योजना तैयार की है। इसके तहत विद्यार्थियों का सीखने का स्तर उनकी कक्षा के स्तर से किसी भी रूप में कम नहीं रहने दिया जाएगा।

शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने इसके लिए आदेश जारी कर दिए हैं। इसके तहत सरकारी स्कूल में रोजाना सातवां पीरियड रिवीजन का रखा जाएगा। शिक्षकों को प्रत्येक शनिवार को सप्ताह भर में इस पीरियड में कराई पढ़ाई का आंकलन भी करना होगा। इस ट्रैकिंग के आधार पर शिक्षक को सोमवार एवं मंगलवार को गणित एवं विज्ञान के वही टॉपिक फिर से पढ़ाने होंगे, जो विद्यार्थियों के दिमाग में नहीं बैठे हैं। इस पूरी कवायद के पीछे विद्यार्थी की पढ़ने की क्षमता को भी विकसित करना है। कक्षा 3 से 5 के विद्यार्थियों के पठन-पाठन कौशल में सुधार करना। लेखन कौशल में अभिवृद्धि के साथ शब्दों के सही उच्चारण, वाक्य संरचना, वर्तनी एवं व्याकरण का ज्ञान। कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों में साहित्यिक एवं रचनात्मक कौशल का विकास। गणितीय दक्षता के लिए सरल गणितीय संक्रियाओं की समझ उत्पन्न करना।

कक्षा 1 और 2 का रहेगा यह प्लान : विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने एवं समझने में सक्षम बनाना। संख्याओं की पहचान और बुनियादी गणितीय संक्रियाओं में सत्र 2026-27 तक दक्ष बनाना। विद्यार्थी कक्षा 3 में क्रमोन्नत होने से पहले पढ़ने, लिखने एवं संख्या ज्ञान में कक्षा स्तर की दक्षता में सक्षम हो जाए। गणित की प्रश्नावली और विज्ञान के सभी पाठों में फार्मूले समझ आ जाए।

शिक्षा निदेशालय के एसओ अरुण कुमार शर्मा ने बताया कि विशेष पीरियड को स्कूल में कार्यरत शिक्षकों में से ही एक शिक्षक लेगा। शिक्षा विभाग ने वर्कशीट भी जारी कर रखी है। नई व्यवस्था का उद्देश्य पढ़ाई में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करना है। इसमें वर्कशीट भरी जाएगी। सप्ताह के अंतिम दिन शिक्षक मूल्यांकन करेगा कि बच्चे को कौन-कौन सा अध्याय या गणित का सवाल गहराई से समझ नहीं आया। फिर सोमवार और मंगलवार को उस विषय के पीरियड में शिक्षक उसे फिर से समझाएंगे। सत्र के लिए विभाग ने यह तय किया विजन सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता में सुधार करना, लर्निंग लेवल को विद्यार्थी की कक्षा के स्तर अनुरूप लाना, शिक्षण को आसान और आनंददायी और रुचिकर बनाना है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 10 अगस्त, 2024

सावन मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र रविवार प्रातः 5:49 तक, साध्य योग दिन 2:52 तक, कौलव करण सांय 4:30 तक, चन्द्रमा आज सांय 4:18 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कल्की जयन्ती, श्रियाल छठ, वर्ण षष्ठि, अश्वध मारूती पूजन, नमीनाथ जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:38 से 9:16 तक, चर 12:32 से 2:10 तक, लाभ-अमृत 2:10 से 5:30 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:04

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों का विस्तार होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

सिंह
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। आज परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मकर
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा। मानसिक तनाव अभी बना रहेगा।

मीन
परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।